

देवउठनी एकादशी

पूजा विधि और आरती हिन्दी में



देवउठनी एकादशी पूजा विधि

- ❖ सुबह जल्दी उठकर स्नान आदि से निवृत्त हो जाएं।
- ❖ घर के मंदिर में दीप प्रज्वलित करें।
- ❖ भगवान विष्णु का गंगा जल से अभिषेक करें।
- ❖ भगवान विष्णु को पुष्प और तुलसी दल अर्पित करें।
- ❖ इंदिरा एकादशी व्रत कथा सुने या पढ़ें।
- ❖ भगवान की आरती करें।
- ❖ भगवान को भोग लगाएं। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि भगवान को सिर्फ सात्विक चीजों का भोग लगाया जाता है।
- ❖ भगवान विष्णु के भोग में तुलसी को जरूर शामिल करें। ऐसा माना जाता है कि बिना तुलसी के भगवान विष्णु भोग ग्रहण नहीं करते हैं।
- ❖ इस पावन दिन भगवान विष्णु के साथ ही माता लक्ष्मी की पूजा भी करें।
- ❖ इस दिन भगवान का अधिक से अधिक ध्यान करें।

देवउठनी एकादशी व्रत कथा

कथा -1

एक राजा के राज्य में सभी लोग एकादशी का व्रत रखते थे। प्रजा तथा नौकर-चाकरों से लेकर पशुओं तक को एकादशी के दिन अन्न नहीं दिया जाता था।

एक दिन किसी दूसरे राज्य का एक व्यक्ति राजा के पास आकर बोला- महाराज! कृपा करके मुझे नौकरी पर रख लें। तब राजा ने उसके सामने एक शर्त रखी कि ठीक है, रख लेते हैं। किन्तु रोज तो तुम्हें खाने को सब कुछ मिलेगा, पर एकादशी को अन्न नहीं मिलेगा।

उस व्यक्ति ने उस समय 'हाँ' कर ली, पर एकादशी के दिन जब उसे फलाहार का सामान दिया गया तो वह राजा के सामने जाकर गिड़गिड़ाने लगा- महाराज! इससे मेरा पेट नहीं भरेगा। मैं भूखा ही मर जाऊँगा। मुझे अन्न दे दो।

यह सुनकर राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बोला- मैं नहीं मान सकता कि भगवान तुम्हारे साथ खाते हैं। मैं तो इतना व्रत रखता हूँ, पूजा करता हूँ, पर भगवान ने मुझे कभी दर्शन नहीं दिए। राजा की बात सुनकर वह बोला- महाराज! यदि विश्वास न हो तो साथ चलकर देख लें। राजा एक पेड़ के पीछे छिपकर बैठ गया। उस व्यक्ति ने भोजन बनाया तथा भगवान को शाम तक पुकारता रहा, परंतु भगवान न आए। अंत में उसने कहा- हे भगवान! यदि आप नहीं आए तो मैं नदी में कूदकर प्राण त्याग दूंगा।

कथा -2

एक राजा था। उसके राज्य में प्रजा सुखी थी। एकादशी को कोई भी अन्न नहीं बेचता था। सभी फलाहार करते थे। एक बार भगवान ने राजा की परीक्षा लेनी चाही। भगवान ने एक सुंदरी का रूप धारण किया तथा सड़क पर बैठ गए। तभी राजा उधर से निकला और सुंदरी को देख चकित रह गया। उसने पूछा- हे सुंदरी! तुम कौन हो और इस तरह यहां क्यों बैठी हो?

तब सुंदर स्त्री बने भगवान बोले- मैं निराश्रिता हूं। नगर में मेरा कोई जाना-पहचाना नहीं है, किससे सहायता मांगू? राजा उसके रूप पर मोहित हो गया था। वह बोला- तुम मेरे महल में चलकर मेरी रानी बनकर रहो। सुंदरी बोली- मैं तुम्हारी बात मानूंगी, पर तुम्हें राज्य का अधिकार मुझे सौंपना होगा। राज्य पर मेरा पूर्ण अधिकार होगा। मैं जो भी बनाऊंगी, तुम्हें खाना होगा। राजा उसके रूप पर मोहित था, अतः उसकी सभी शर्तें स्वीकार कर लीं। अगले दिन एकादशी थी। रानी ने हुक्म दिया कि बाजारों में अन्य दिनों की तरह अन्न बेचा जाए।

एकादशी माता की आरती

ॐ जय एकादशी, जय एकादशी, जय एकादशी माता ।

विष्णु पूजा व्रत को धारण कर, शक्ति मुक्ति पाता ॥ ॐ जय एकादशी... ॥

तेरे नाम गिनाऊं देवी, भक्ति प्रदान करनी ।

गण गौरव की देनी माता, शास्त्रों में वरनी ॥ ॐ जय एकादशी... ॥

मार्गशीर्ष के कृष्णपक्ष की उत्पन्ना, विश्वतारनी जन्मी ।

शुक्ल पक्ष में हुई मोक्षदा, मुक्तिदाता बन आई ॥ ॐ जय एकादशी... ॥

पौष के कृष्णपक्ष की, सफला नामक है ।

शुक्लपक्ष में होय पुत्रदा, आनन्द अधिक रहै ॥ ॐ जय एकादशी... ॥

नाम षटतिला माघ मास में, कृष्णपक्ष आवै ।

शुक्लपक्ष में जया, कहावै, विजय सदा पावै ॥ ॐ जय एकादशी... ॥

विजया फागुन कृष्णपक्ष में शुक्ला आमलकी ।

पापमोचनी कृष्ण पक्ष में, चैत्र महाबलि की ॥ ॐ जय एकादशी... ॥

चैत्र शुक्ल में नाम कामदा, धन देने वाली ।

नाम बरुथिनी कृष्णपक्ष में, वैसाख माह वाली ॥ ॐ जय एकादशी... ॥

शुक्ल पक्ष में होयमोहिनी अपरा ज्येष्ठ कृष्णपक्षी ।

नाम निर्जला सब सुख करनी, शुक्लपक्ष रखी ॥ ॐ जय एकादशी... ॥

योगिनी नाम आषाढ में जानों, कृष्णपक्ष करनी ।

देवशयनी नाम कहायो, शुक्लपक्ष धरनी ॥ ॐ जय एकादशी... ॥

कामिका श्रावण मास में आवै, कृष्णपक्ष कहिए ।

श्रावण शुक्ला होयपवित्रा आनन्द से रहिए ॥ ॐ जय एकादशी... ॥

अजा भाद्रपद कृष्णपक्ष की, परिवर्तिनी शुक्ला ।

इन्द्रा आश्विन कृष्णपक्ष में, व्रत से भवसागर निकला ॥ ॐ जय एकादशी... ॥

पापांकुशा है शुक्ल पक्ष में, आप हरनहारी ।

रमा मास कार्तिक में आवै, सुखदायक भारी ॥ ॐ जय एकादशी... ॥

देवोत्थानी शुक्लपक्ष की, दुखनाशक मैया ।

पावन मास में करुंविनती पार करो नैया ॥ ॐ जय एकादशी... ॥

परमा कृष्णपक्ष में होती, जन मंगल करनी ।

शुक्ल मास में होयपद्मिनी दुख दारिद्र हरनी ॥ ॐ जय एकादशी... ॥

जो कोई आरती एकादशी की, भक्ति सहित गावै ।

जन गुरदिता स्वर्ग का वासा, निश्चय वह पावै ॥ ॐ जय एकादशी... ॥

श्री विष्णु जी की आरती

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी! जय जगदीश हरे ।
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे ॥

जो ध्यावै फल पावै, दुख बिनसे मन का ।
सुख-संपत्ति घर आवै, कष्ट मिटे तन का ॥ ॐ जय... ॥

मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूं किसकी ।
तुम बिनु और न दूजा, आस करूं जिसकी ॥ ॐ जय... ॥

तुम पूरन परमात्मा, तुम अंतरयामी ॥
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ ॐ जय... ॥

तुम करुणा के सागर तुम पालनकर्ता ।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥ ॐ जय... ॥

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ।
किस विधि मिलूं दयामय! तुमको मैं कुमति ॥ ॐ जय... ॥

दीनबंधु दुखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे ।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ ॐ जय... ॥

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ।
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा ॥ ॐ जय... ॥

तन-मन-धन और संपत्ति, सब कुछ है तेरा ।
तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा ॥ ॐ जय... ॥

जगदीश्वरजी की आरती जो कोई नर गावे ।
कहत शिवानंद स्वामी, मनवांछित फल पावे ॥ ॐ जय... ॥